بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **03.04.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अहमदियत, अल्लाह तआला के हाथ का लगाया हुआ पौधा है जिसने अल्लाह तआला के वादों के अनुसार फलना फूलना तथा बढ़ना है, इन्शाअल्लाह। सामप्रदायिकता के बजाए एक उम्मत बनकर मसीह मौऊद एंव मेहदी मौऊद के हाथ पर एकत्र हो जाओ। पतन से बचने तथा प्रगति के मार्ग पर दोबार चलने का यही एक साधन है।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक दिन अपने साथियों के संग बाहर सैर करने के लिए तशरीफ़ ले गए। रास्ते में अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और समर्थनों का वर्णन हुआ तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हक़ के चमकाने और हमारे इस सिलसिले के समर्थन में इतनी अधिकता के साथ ज़ोर दे रहा है, फिर भी इन लोगों की आँखें नहीं खुलतीं। आपने फ़रमाया कि एक विरोधी ने एक बार मुझे पत्र लिखा कि आपके विरोध में लोगों ने कुछ कमी नहीं की परन्तु एक बात का उत्तर हमें नहीं आता कि इस विरोध के चलते भी आप हर बात में सफल हो जाते हैं।

अतः ये आपसे अल्लाह तआला के वादे थे जिसके परिणाम प्रकट हुए। उस समय भी तथा केवल उसी समय नहीं बल्कि आज तक विरोधी अपना ज़ोर लगाते चले जा रहे हैं परन्तु यह सिलसिला अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बढ़ता चला जा रहा है। जहां भी दुनिया के किसी भी क्षेत्र में विरोधियों ने अहमदियों को दबाने अथवा नष्ट करने का प्रयास किया तो अल्लाह तआला ने उन देशों में जहां अहमदियों की क़ुर्बानी के स्तर बढ़ाए वहीं दुनिया के अन्य देशों में स्वंय ही ऐसे रास्ते जमाअत की प्रगति के लिए खोले कि यदि हम केवल अपनी चेष्टाओं से खोलने का प्रयत्न करते तो कभी सफल न हो सकते थे। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि अहमदियत, अल्लाह तआला के हाथ का लगाया हुआ पौधा है जिसने अल्लाह तआला के वादों के अनुसार फलना फूलना तथा बढ़ना है, इन्शाअल्लाह।

इस समय मैं अल्लाह तआला के फ़ज़लों की घटनाएं, इस ज़माने में किस प्रकार अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाता है, किस प्रकार लोगों के दिलों को खोलता है, किस प्रकार उन तक अहमदियत का पैग़ाम पहुंचता है, इसके सम्बंध में कुछ घटनाएं पेश करता हूँ।

हमारे नाइजर के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक तबलीग़ी दौरे के बीच एक कच्चा रास्ता पकड़ा तथा उस पर तबलीग़ करते हुए आगे चलते गए। तीन दिन के बाद उसी रास्ते से वापसी पर एक जगह लोगों ने हमें रोक लिया और कहा कि हम सब आपकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे, आप अभी इमाम साहब के पास चलें। जब हम इमाम के पास गए। इमाम साहब ने कहा कि अल्लाह तआला ने हमारी संतुष्टि करा दी है इस लिए हमें अब जमाअत की सच्चाई में कोई सन्देह नहीं रहा। संतुष्टि किस प्रकार अल्लाह तआला ने कराई। इसका वृत्तांत उन्होंने सुनाया कि जब आप यहां से होकर गए थे, आपके जाने के बाद मारावी शहर के वहाबियों के बड़े इमाम साहब अपने लोगों के साथ यहां आए तथा यह कहते रहे कि अहमदी तो काफ़िर हैं और तुम लोगों ने काफ़िरों को अपनी मस्जिद में घुसने दिया और तबलीग़ की अनुमति दी क्यूं, किया ऐसा, जिस पर गाँव के इमाम साहब ने उनसे कहा कि यही अन्तर है आप में तथा अहमदियों में। आप जब से यहां आए हैं आपने काफ़िरों के अतिरिक्त कोई बात नहीं की और वे जब तक यहां रहे, अर्थात अहमदी, उन्होंने क़ुरआन करीम और हदीस के अतिरिक्त कोई बात नहीं की। यदि अहमदियों की यही बात कुफ़्र है तो हमें उनका यह कुफ़्र पसन्द है। वहां बैअतें हुईं और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से एक बड़ी जमाअत स्थापित हो गई।

फिर तंज़ानिया से टबूरा के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक बड़ी जमाअत की स्थापना यहां हुई। यह जमाअत टबूरा शहर से पैंतीस किलो मीटर की दूरी पर है। इस स्थान पर जमाअत की स्थापना एक अहमदी दोस्त सुलेमान जुमा साहब के द्वारा हुआ। वे साहब वहां तबलीग़ के लिए जाते थे तथा पम्फ़लैट बांटते थे फिर इस के कारण कुछ लोगों ने बैअत कर ली। इसके बाद सिलसिले के मुअल्लिम ने बार बार लगातार वहां दौरा करके तबलीग़ की जिस के कारण कुछ और लोगों ने बैअत की और अल्लाह के फ़ज़्ल से अब वहां संख्या बढ़ती चली जा रही है। जमाअत के लोग ग़रीब हैं परन्तु ईमान की भावना से परिपूर्ण हैं और ''अपनी सहायता आप'' के अंतर्गत वहां एक कच्ची मस्जिद भी बना दी है और चन्दे के निज़ाम में भी सब शामिल हैं।

इसी प्रकार माली के अमीर साहब लिखते हैं कि तेजानिया सम्प्रदाय के एक बड़े इमाम आदम तंकारा साहब ने बैअत की। उन्होंने बैअत करते हुए बताया कि वे एक लम्बे समय से जमाअत की कैसिट्स तथा रेडियो सुन रहे थे। माली में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हमारे अनेक रेडियो स्टेशन हैं। एफ़ एम रेडियो स्टेशन है और उनका प्रसार सत्तर अस्सी मील तक है, अल्लाह के फ़ज़्ल से

काफ़ी फैला हुआ है, बड़े विशाल क्षेत्र में तबलीग़ होती है, कहते हैं- उनके वालिद मरहूम अर्थात जो आदम साहब थे तंजानिया सम्प्रदाय के बड़े इमाम थे और उन्होंने इस क्षेत्र के 93 शिर्क करने वाले गाँव को मुसलमान किया था। एक रात उन आदम साहब ने सपने में देखा कि उनके वालिद साहब कहते हैं कि अहमदियत ही सत्य मार्ग है और वह अहमदियत के पैग़ाम को पहुंचाने के लिए अत्यधिक प्रयास करे, अर्थात उनका बेटा। तो इसके बाद ये हमारे मुअल्लिम को मिले, मुअल्लिम साहब तबलीग़ के लिए एक गाँव में गए और उस गाँव के लोग पहले शिर्क करते थे, उनके वालिद साहब के माध्यम से मुसलमान हुए थे। अतः उस गाँव के इमाम जिनकी आयु इस समय 87 वर्ष है वे आदम साहब के वालिद साहब के घनिष्ट मित्र थे। उस रात उन्होंने तबलीग़ की और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से तीन हज़ार चार सौ बैअतें वहां हो गईं। फिर माली के रीजन जीमा से वहां के मुअल्लिम साहब लिखते हैं कि एक दिन हमारे रीजन के एक अहमदी अब्दुस्सलाम तरावड़े साहब अपने निकट के गाँव में गए तो वहां उपस्थित गाँव वालों ने उनको कहा कि लम्बे समय से यहां बारिश नहीं हो रही है यदि आपकी जमाअत सच्ची जमाअत है तो आप दुआ करें कि वर्षा हो जाए। यह मुअल्लिम जो हैं यह वहीं स्थानीय माली के रहने वाले हैं। उन्होंने दुआ की, कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का निशान दिखा। और कहते हैं कि इस दुआ के बाद वहां बादल जमा होना शुरु हुए और इतनी भारी वर्षा हुई कि हर ओर पानी एकत्र हो गया। इसके कुछ समय के बाद लोग अब्दुस्सलाम के पास आए और बताया कि हमें पता लग गया है कि अहमदिया जमआत वास्तव में सच्ची और ख़ुदाई जमाअत है और इस प्रकार पूरा गाँव बैअत करके जमाअत में दाख़िल हो गया।

हमारे ग़ाना के मुबल्लिग़ थे जो कि अब वफ़ात पा गए हैं। उन्होंने अपनी एक घटना लिखी है कि एक स्थान पर हमारे एक दाई इलल्लाह को तबलीग़ के समय बारिश की दुआ करने के लिए कहा। जिस पर उन्होंने ऐलान किया कि क्यूंकि वे इमाम मेहदी के पैग़ाम को पहुंचाने के लिए तबलीग़ कर रहे हैं इस लिए उनकी दुआ क़बूल होगी और रात को बारिश होगी। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उसी रात एक बजे उस क्षेत्र में भारी वर्षा हुई तथा दुआ के क़बूल होने के इस निशान को देखते हुए उस क्षेत्र से एक बड़ी संख्या को अहमदियत क़बूल करने का वरदान मिला।

फिर आय्वरी कोस्ट के अमीर साहब लिखते हैं कि एक नौ-मुबायअः फ़ातिमा साहिबा बयान करती हैं कि अहमदियत क़बूल करने के बाद उन्हें वास्तविक शांति एंव संतोष मिला। अहमदियत ने उन्हें वास्तविक इस्लाम से परिचित कराया और उन्होंने कहा कि मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मरने के समय तक अहमदियत पर क़ायम रहूंगी। आय्वरी कोस्ट से एक नौ-मुबाय दोस्त तूरे अलवली साहब लिखते हैं कि बैअत करने के पश्चात उनकी रूहानियत में वृद्धि हुई, नमाज़ों में आनन्द एंव शांति मिलने लगी, कर्मों की स्थिति भी अच्छी हुई और अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम के अनुसार कर्म करना सरल हो गया और कहते हैं कि इसके अतिरिक्त अहमदियत के तर्क शास्त्र के द्वारा अल्लाह की पहचान के ज्ञान में भी वृद्धि हो रही है।

फिर मुबल्लिग़ इंचार्ज गनी कनाकरी लिखते हैं कि एक दोस्त सिला साहब इस उद्देश्य के साथ मिशन आए कि अपने गाँव में मस्जिद निर्माण के लिए अहमदिया जमाअत से सहायता ली जाए। तो कहते हैं कि मैं ने उन्हें जमाअत का परिचय कराया, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने के विषय में बताया। एक बड़ी लम्बी वार्ता के बाद ये इतने ख़ुश थे, कहने लगे, कि आपने तो मेरी आँखें खोल दीं और कहने लगे कि मेरी इच्छा है कि आप मेरे गाँव में चलें ताकि यह पैग़ाम सब लोगों तक पहुंच जाए। इस प्रकार प्रोग्राम बनाकर उनके गाँव गए। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पूरा गाँव तथा निकट के पाँच अन्य गाँव बैअत करके अहमदियत में दाख़िल हो गए। कांगो के एक ईसाई पादरी ने अहमदियत क़बूल की तथा उनमें विशेष बदलाओ आया, वे कहने लगे कि मैं ने कई वर्षों तक पादरी का काम किया है तथा लोगों को धार्मिक शिक्षा दी है परन्तु मन की शांति और ख़ुदा की निकटता प्राप्त करने का अनुभव केवल अहमदिया जमाअत में हुआ है, इससे पहले कभी नहीं हुआ था, अब अहमदियत ही मेरा सब कुछ है।

अल-जज़ायर के एक दोस्त अपने परिवार के अहमदियत में दाख़िल होने के विषय में लिखते हैं कि उनकी वालिदा ने सपने में देखा कि एक शेख़ उनके घर आए हैं तथा उनके बच्चों को इस्लाम की नेक शिक्षा दे रहे हैं जिसके कारण उनके घर में नेक प्रभाव पड़ा है तथा घर में उस व्यक्ति के प्रति बड़ी श्रद्धा पैदा हो गई है। उनकी वालिदा लिखती हैं कि एक दिन उनकी बेटी टी वी देख रही थी तथा विभिन्न चैनल बदल रही थी कि अचानक एम टी ए पर जाकर रुक गई। उस समय वहां मेरी तसवीर एम टी ए पर आ रही थी तो वह तसवीर देखकर ख़ुशी से उछली तथा कहने लगी कि यह वही व्यक्ति है जिसको मैं ने सपने में देखा। इसके पश्चात उन्होंने यथावत एम टी ए देखना आरम्भ किया जिसके द्वारा उन्हें ज्ञात हुआ कि इमाम मेहदी जिसकी प्रतीक्षा संसार कर रहा है, तशरीफ़ ला चुके हैं और इस प्रकार उन्होंने नवम्बर 2013 में बैअत की तथा जमाअत में दाख़िल हो गए। फिर कनाकरी के मुबल्लिग़ इंचार्ज साहब लिखते हैं कि राजधानी कनाकरी से दो सौ किलो मीटर दूर सोमियो यावी एक बहुत बड़ा गाँव है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस वर्ष यहां निरन्तर सम्पर्क के परिणाम स्वरूप पूरा गाँव तथा अन्य गाँव भी अहमदी हो गए। कहते हैं कि इतनी संख्या को देखते हुए हमारा विचार था कि यहां सुसंठित जमाअत की स्थापना की जाए। हम जमाअती निज़ाम के लिए वहां पहुंचे तो जमाअत के लोग हमारी प्रतीक्षा में थे जिनमें वहां की जुम्अः मस्जिद के इमाम भी थे जो कि बैअत करके जमाअत में शामिल हो चुके थे। जब हमने उन्हें बताया कि अब हम यहां

यथावत जमाअत का संगठन स्थापित करना चाहते हैं तो गाँव के चीफ़ ने कहा कि हमारा धन सम्पत्ति तथा सब कुछ प्रस्तुत है और यह बड़ी मस्जिद आपकी है बल्कि पूरा गाँव आपका है। और कहने लगे कि हम तो इतने प्रसन्न हैं कि अहमदियत और वास्तविक इस्लाम को क़बूल करके हमने इस जीवन में इस नेअमत को पा लिया है जो अत्यधिक मूल्यवान है और अब हमारी आँखें खुली हैं तथा हमें वास्तविक इस्लाम का चेहरा नज़र आया है।

हमारे हैं, हाफ़िज़ मुहम्मद साहब, इटली के। उन्होंने कबाबीर से लाइव प्रसारित होने वाले प्रोग्राम जो एम टी ए पर होता है, कहने लगे मैं लगभग छः महीने से दिल में बैअत कर चुका हूँ, इसको देखने की बाद। ख़ुदा तआला इस पर गवाह है लेकिन अभी तक फ़ार्म भर कर भेज नहीं सका। मैं अकेला रहता हूँ, मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं कि मैं ने इस सत्य को पहचान लिया। इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की सत्यता के प्रमाण में मैं स्वंय एक निशान हूँ। वह इस प्रकार कि साल 2008 में पहली बार अचानक मैं ने एम टी ए देखा जिसमें नासिख़ व मंसूख़ के विषय में वार्ता चल रही थी। उस समय मुझे आप लोगों के विषय में अथवा इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं थी। प्रोग्राम अच्छा लगा और देखता चला गया। इसके बाद जिनों की वास्तविकता के विषय में अल-हिवारुल मुबाशिर प्रोग्राम देखा। इस प्रोग्राम के द्वारा मैं ने इस जमाअत की सत्यता को स्वीकार कर लिया तथा फिर यह क्रम चलता रहा और इसके पश्चात उन्होंने 2013 में, कहते हैं छः महीने पहले 2013 में हज़रत मसीह की सलेबी मृत्यु से मुक्ति तथा उनकी वफ़ात के विषय में प्रोग्राम देखकर इतनी संतुष्टि प्राप्त हुई कि बैअत किए बिना न रह सका और अब इस प्रोग्राम के माध्यम से अपनी बैअत की घोषणा करता हूँ।

फिर अल-जज़ायर से अब्दुल हकीम साहब कहते हैं मैं नव्वे के दशक में सिविल डिफ़ैन्स स्क्वाड में शामिल हुआ क्यूंकि देश में धार्मिक संगठन धर्म के नाम पर आंतक फैला रहे थे तथा लोगों की हत्या करके सम्पत्ति लूट रहे थे। यही हाल है सभी आतंकी संगठनों का जो इस्लाम के नाम पर काम कर रही हैं। कहते हैं, मेरे एक पुराने दोस्त अब्बास साहब जो उस समय अहमदी हो चुके थे परन्तु मेरे संज्ञान में नहीं था, वे एक बार मुझसे मिले तथा विभिन्न विषयों पर बात की। उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ की ऐसी व्याख्या की जो पहले कभी न सुनी थी और बुद्धि के अनुसार थी, मन उसको सुनकर संतुष्ट हुआ। अतः मैं ने उसी समय बैअत फ़ार्म भरा और इस प्यारी जमाअत में शामिल हो गया। इसके कुछ दिन पश्चात, कहते हैं, मैं ने सपने में देखा कि मैं एक अंधेरे मैदान में रात को चल रहा हूँ। फिर एक बुज़ुर्ग दिखाई देते हैं जो मेरा हाथ थाम कर चल पड़ते हैं। हम समुद्र के किनारे पहुंचते हैं तो वहां एक कश्ती होती है जिसके पास एक अन्य साहब खड़े नज़र आते हैं, जो ऐसा लगता है कि हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम तीनों उसमें सवार हो जाते हैं। मैं दिल में सोचता हूँ कि ये कौन लोग हैं? तो जो बुज़ुर्ग मुझे साथ लाए थे उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम हूँ और ये इमाम मेहदी और मसीह मौऊद मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम हैं। तत्पश्चात यह किश्ती चलते चलते एक पानी के जहाज़ के पास पहुंच जाती है तो वे दोनों मुझसे फ़रमाते हैं कि इस पानी के जहाज़ में सवार हो जाओ तथा इन जहाज़ में सवार होने वालों के संग मिल जाओ वे तुम्हारे वास्तविक परिवार वाले हैं।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम भी किस प्रकार दिलों पर प्रभाव डालता है। अब्दुल अज़ीज़ साहब हैं, मराकश के, कहते हैं। मैं इतिहास और भूगोल का अध्यापक हूँ तथा इसके बावजूद कि ख़ुदा ने बड़ी नअमतें प्रदान की हैं, मेरी पदोन्नित भी हो गई, मकान भी है परन्तु मैं मन की लालसा में पड़ा रहा तथा पापों में घिरता गया, यहां तक कि ख़ुदा तआला ने बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान की और मैं ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तको का अध्ययन आरम्भ किया तो अनुभव हुआ कि यह मेरे ज़ख़्मों का मरहम तथा मेरी आत्मा का इलाज हैं और मुझे अपने मन पवित्र करने की चिंता पैदा हुई तथा हुज़ूर अनवर की सेवा में इस आश्य के कारण लिखने की चेतना पैदा हुई कि ख़ुदा तआला मुझे सच्चे लोगों में लिख ले। फिर जापान से हमारी जमाअत के सदर लिखते हैं कि अल्लाह तआला, जो जमाअत मे शहादतें होती हैं, इनके बदले किस प्रकार समर्थन व सहायता फ़रमाता है। कहते हैं शेख़ुपुरा में जो शहीद हुए ख़लील अहमद साहब, जब मैं ने ख़ुत्बे में उनका वर्णन किया तो एक जापानी दोस्त जिनके साथ छः महीने से सम्बंध था, जमाअत के साथ, इस लिए कि उनको तबलीग़ किया करते थे, उनका फ़ून आया कि मैं अहमदी होना चाहता हूँ तो मैं ने उन्हें मस्जिद में बुला लिया और बैअत की काररवाई हुई और उन्होंने इस शहादत के विषय में सुनकर उसके पश्चात बैअत की, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से माली निज़ाम में शामिल हैं। यादगीर के ज़िला अमीर साहब लिखते हैं कि यादगीर नगर के एक नौजवान मंजू नाथ जिनका सम्बंध हिन्दु धर्म से था, वे बी एस सी की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उनके साथ हमारे एक ख़ादिम भी पढ़ाई कर रहे थे। एक दिन उनको नोट्स लिखने के लिए नोट बुक की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने हमारे ख़ादिम की नोट बुक ले ली, जिस पर इंसानियत ज़िन्दाबाद और मुहब्बत सबके लिए नफ़रत किसी से नहीं, लिखा हुआ था। यह पढ़ कर उनके दिल पर बड़ा प्रभाव पड़ा कि इस ज़माने जहां इतनी अशांति फैली हुई है इससे अधिक सुन्दर पैग़ाम दूसरा नहीं हो सकता। इस नारे ने उनके दिल पर बड़ा प्यारा प्रभाव छोड़ा तथा अधिक जानकारी के लिए उन्होंने हमारे ख़ादिम से अहमदियत के बारे में पूछा, उनको अहमदियत का लिट्रेचर दे दिया गया। घोर अध्ययन के पश्चात उनको इस बात का ज्ञान हुआ कि अहमदिया जमाअत एक सुसंगठित एंव सच्ची जमाअत है जो शांति स्थापना हेतु और

इंसानियत की सेवा के लिए अत्यधिक प्रयासरत है। जमाअत के विषय में बहुत कुछ जानने के बाद उनका दिल संतुष्ट हो गया और उन्होंने मार्च 2015 में बैअत कर ली। अतः अहमदियों के केवल नारे नहीं बल्कि कर्म भी इस प्रकार के होने चाहिएं क्यूंकि यह भी तबलीग़ का साधन बनते हैं। कई बार मैं कह चुका हूँ पहले भी। इस लिए केवल अपनी शिक्षाओं को बताने से प्रभाव नहीं होगा परन्तु जब वास्तव में लोग कर्मों को देखेंगे तो फिर ध्यान आकर्षित होगा। इस लिए यह बड़ा भारी दायित्व हर एक अहमदी पर आता है।

मिस्र से एक दोस्त महमूद साहब लिखते हैं कि ख़ुदा की क़सम, ख़दा की क़सम, आप लोग सत्य पर हैं तथा काश कि सारा विश्व आपके मार्ग का अनुसरण करने लग जाए। अलहमदु लिल्लाह कि हमारे वालिद साहब ने बैअत की, फिर मेरे भाई ने, फिर वालिदा ने तथा फिर मैं ने और फिर मेरे चचेरे भाई ने और मेरे वालिद साहब के चचेरे भाई ने भी बैअत कर ली है। इस प्रकार ये उन असंज़्य घटनाओं में से कुछ एक हैं जो मैं प्रायः अपनी रिपोर्टस में देखता हूँ कि किस प्रकार अल्लाह तआला अपने निशान दिखला रहा है, किस प्रकार सपनों के द्वारा लोगों का मार्ग दर्शन कर रहा है, किस प्रकार विरोधियों के विरोध भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर नेक प्रकृति के लोगों के दिलों को फेर रही हैं, किस प्रकार ईसाई पादरी भी इस्लाम की सत्यता को स्वीकार कर रहे हैं, किस प्रकार सत्य ज्ञान तथा ख़ुदा की पहचान में मसीह मौऊद को मान कर लोग उन्नति कर रहे हैं, किस प्रकार अपने कर्मों की दशाओं को सुधारने की ओर ध्यान हो रहा है। अतः क्या ये सारी बातें किसी इंसान के प्रयासों का परिणाम हैं। नहीं, बल्कि निःसन्देह ये बातें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हक़ में ख़ुदा तआला के समर्थन एंव सहायता का पता देती हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सत्यता का प्रमाण हैं। अतः हमें नए आने वालों की घटनाएं सुनकर जहां अपने तथा उनके ईमानों में वृद्धि की दुआ करनी चाहिए वहीं मुस्लिम उज़्मत के विषय में भी दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि प्रदान करे और ये ज़माने के इमाम को मान कर अपनी दुनिया व आख़िरत संवारने वाले बन सकें। इस समय मुस्लिम दुनिया की हालत दयनीय है, लीडर जनता पर अत्याचार कर रहे हैं, जनता न्याय एंव मार्ग दर्शन न मिलने के कारण लीडरों के विरुद्ध लड़ रहे हैं। हर एक स्वार्थी लीडर बन कर अपना गुट बना कर बैठा हुआ है। विभिन्न सज़्प्रदाय एक दूसरे का गला काटने में व्यस्त हैं। यह भी नहीं सोचते कि क्यूं अल्लाह तआला के इस अन्तिम नबी के मानने वालों में इतना उपद्रव है? क्यूं उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच कर पतन के अंधकार में लगभग सारे मुस्लिम देश गिर रहे हैं। इस पतन से बचने तथा प्रगति के मार्ग पर पुनः चलने का केवल एक ही माध्यम है और वह वह है जो ख़ुदा तआला ने बताया है कि इस मसीह मौऊद को मानो जिसने आख़िरीन को पहलों से मिलाना है। साज़्प्रदायिकता के बदले एक उज़्मत बन कर मसीह मौऊद व मेहदी मौऊद के हाथ पर एकत्र हो जाओ। अल्लाह तआला हमें यह तौफ़ीक़ दे, इसके लिए बड़ी दुआएं करनी चाहिएं, अल्लाह तआला हमें भी दुआओं की तौफ़ीक़ दे और इन्हें क़बूल भी फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुज़्अः के अन्त में हुज़ूर अनवर ने एक हाज़िर जनाज़ा तथा एक ग़ायब जनाज़े का ऐलान फ़रमाया। जो जनाज़ा उपस्थित है वह मुकर्रम इंतसार अहमद अयाज़ साहब इब्ने मुकर्रम डाक्टर इफ़तख़ार अहमद अयाज़ साहब का है। जिनका 28 मार्च 2015 को पचास वर्ष की आयु में देहांत हो गया। हुज़ूर अनवर ने उनके शुभ वर्णन एंव सेवाओं का वर्णन फ़रमाया। मरहूम मोहतरम मौलाना अताउल मुजीब साहब राशिद के भानजे थे। जो जनाज़ा ग़ायब है वह मुकर्रम अज़ीज़म वसीम अहमद साहब जामिअः अहमदिया क़ादियान के एक विद्यार्थी का है जो 25 मार्च 2015 को ब्यास दरया में डूबने के कारण वफ़ात पा गए। उनकी आयु 20 वर्ष थी, 4 दिन बाद उनकी लाश बरामद हुई। ज़ाबते की कारवाई के बाद बहिश्ती मक़बरा क़ादियान में उनको दफ़न किया गया।

हुज़ूर अनवर ने दोनों मरहूमों की मग़फ़िरत व दर्जों की बुलन्दी और उनके परिवार वालों को संतोष एंव हौसला अता होने के लिए दुआ की। जुज़्अः की नमाज़ के बाद जनाज़ा पढ़ने का ऐलान फ़रमाया।

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar Ayyadahullhu Ta'la 03.04.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,...
...

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*